कला-चौथे आर का नया स्वरूप

लेखक - जेसन ओहलर

1996, 1998, 2000 जेसन ओहलर वेबसाइट: डब्लू डब्लू डब्लू. जेसन ओहलर.काम/फोर्थआ

आर्टीकल नोट्स

1 यह लेख पहिले वास्तविक रूप मे एडूकेशन लीडरशीप मेगेजीन, अक्टूबर 2000 मे प्रकाशीत हुआ। अधिक जानकारी के लिये देखें "आर्ट दि फोर्थ आर", और जायें: डब्लू डब्लू डब्लू. जेसन ओहलर. काम/फोर्थ आर.

2. अमेरिका मे प्रारम्भिक शिक्षा को तीन आर कहते है। "तीन आर: पढ़ना, लिखना, और हिसाब"। आवश्यकता है "चौथे आर" की - जो कला है आर शिक्षा की चट्टान है।

3. यह लेख एक बड़े लेख का भाग है। समस्त लेख को पढने के लिये देखें: डब्लू डब्लू डब्लू. जेसन ओहलर.काम/"प्राजेक्ट्स/ आर्ट फोर्थ आर-आर्टिकल. सीरिज हेम

शिक्षा प्रणाली मे एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा है। इस कम्प्यूटर के युग मे यह आवश्यक है कि विद्यार्थी रचनात्मक ढंग से सोचें और कला से पूरा लाभ उठायें। केवल किताबी दुनिया से सम्बन्धित शिक्षा आज के युग मे पूरित नही है। कला की भाषा आने वाले समय की भाषा है। इसे हम अंग्रेजी में "चौथा आर" कहते है। हमें जल्दी से आगे बढ़ना होगा क्योंकि कला हमारी शिक्षा प्रणाली की एक आवश्यक अंग होगी।

मुझे एक आश्चर्यजनक अनुभव हुआ जिसने मुझे विश्वास दिलाया कि कला अब हमारी शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। मैने एक दसवीं कक्षा के विद्यार्थी को कम्प्यूटर पर काम करते देखा। उसे कम्प्यूटर की "टेकनोलोजी" समझने मे कोई बाधा नही थी।

वह बड़ी सुगमता से कम्प्यूटर के यंत्रों का उपयोग कर रहा था। परंतु भाषा और कला सम्बन्धित नियमावली उसकी समझ के बाहर थी। उसके पास बहुत सी तस्वीरें थीं और विडियो क्लिप्स तथा वर्जन इत्यादि भी थे। वह इन सबको और अपनी शब्दावली की सहायता से एक कलात्मक प्रदर्शन के निर्माण की विफल चेष्टा कर रहा था। उस दसवीं कक्षा के विद्यार्थी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि वह किस प्रकार विडियो, चित्रों, संगीत और साउंड बाईट्स का क्रियात्मक उपयोग करे। कलात्मक प्रदर्शन तो उसके लिये बहुत दूर की बात थी। अब यह आवश्यक है कि कला की भाषा का निर्माण हो जो हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग बने। हम अभी तक इसमें सफल नहीं हो सके हैं।

कला और डिजिटल युग

विविध माध्यम संपर्क बहुत थोड़े समय में ही आजकल सर्वव्यापी हो गया है। इसके दो कारण हैं। एक कारण यह है कि यह सस्ता है। इसका उपयोग आसान है और दूसरा यह कि वेब का माध्यम एक सार्वभौम भाषा है जो कि विश्व भर में इन्टरनेट की सहायता से समझी जा सकती है। समय के साथ यह अवश्यंभावी है कि मनुष्यमात्र किताबी सहायता के अतिरिक्त और दूसरे माध्यमों का भी उपयोग करेगा। इसमें चित्रकारी, ध्वनि-प्रसारण और दूसरे विश्वव्यापी साधन होंगे।

इन दो स्थितियों का संगम - कला को हम सब के जीवन में एक स्थायी स्थान देता है। यह अनिवार्य है कि स्कूलों में विद्यार्थियों के जीवन का भी एक अंग बने।

4 "चौथे आर दिवस" की घोषणा की जाये

जिस प्रकार आज शिक्षा हमें पढ़ने लिखने में सहायता देती है और हम अपने कामकाजी जीवन में इससे लाभ उठाते हैं, उसी प्रकार कला भी हमारे जीवन में स्थान ग्रहण करे और हमारी उपयोगिता बढ़ाये। हजारों विडियो के साधन, सीडीज़, डीवीडीज और लाखों नवीनतम वेबसाइट्स - जिनके विषय में हम अभी सोच भी नहीं सकते, इन सबके लिये हमें नये कलाकारों की आवश्यकता होगी - वह होंगे संगीतज्ञ, विडियोग्राफर और दूसरे पपेट्री शिल्पी कोरियोग्राफर और ग्राफिक डिज़ाइनर इत्यादि।

इन्टरनेट एक क्रांतिकारी माध्यम साधन ही नहीं, परंतु यह हमारी शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने वाला है।

डेविड थार्नबर्ग (1990) के शब्दों में हमें अपने बच्चों को भविष्य के लिये तत्पर करना है, भूतकाल के लिये नहीं।

बच्चे वास्तव में शिक्षित हों, इसके लिये आवश्यक है - कि कला शिक्षा का अभिन्न अंग हो (जिसे हम चौथा आर कहते हैं)

यह अनुभव केवल मात्र उनके ली नहीं जो कला को जीवन यापन का साधन मानते हैं। कला का उपयोग सबके लिये होगा जो दस वर्ष पहिले नहीं था

सरकार को कर देने वाले लोग बहुत समय तक कला की उपयोगिता को नहीं समझ सके। इस के कई कारण है। एक है अपने विचारों को प्रकट करने की क्षमता और दूसरा उनकी अपनी विचारधारा। और तीसरा कारण है कि दूसरों की संस्कृति को समझने की अक्षमता। विचारों का आदान प्रदान दूसरों के साथ बहुत सीमित था

इसके अतिरिक्त आम जनता कला को जीवन में कोई स्थान नहीं देती। अतः जब भी धन का अभाव होता है, कला सम्बन्धित अनुबंध तोड़ दिये जाते हैं। भविष्य में ऐसा नहीं इसके लिये यह आवश्यक है कि चौथे आर (कला) को वही स्थान दें जो शिक्षा पाने के लिये तीन आर को दिया जाता है। (पढ़ना, लिखना और गणित)

इन आने वाले समय में कला को किस प्रकार स्कूल प्रणाली का एक अंग बना सकते हैं :-

1. कला को एक नया नाम दिया जाये
2. कला का ज्ञान प्रसारित करने के लिये अनुभवी अध्यापकों को काम पर लगाया जाये
3. शिक्षकों को अधिक सुविधायें दी जांये ताकि वह चौथे आर में प्रवीणता प्राप्त कर सकें।